International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-08-2022, Accepted: 29-08-2022, Published: 15-09-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 7-9

कुबेरनाथ राय की दृष्टि में गांधी

ऋषिकेश कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
आधुनिक भारत में भी अनेक ऋषि मुनियों और महात्माओं का जन्म हुआ, उन में से एक हैं मोहनदास करमचंद गाँधी जिन्हें दुनियाभर में महात्मा गाँधी के नाम से भी जाना जाता है । आज महात्मा गाँधी के विचार एक व्यक्ति के विचार न हो कर एक दर्शन का रूप ले चूका है जिसकी आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है । इस संसार में ऐसे चंद ही लोग हैं जिनके विचार को सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण माना जाता हो । वर्तमान में अखिल ब्रह्माण्ड की परिस्थितियों को देखते हुए अगर कोई विचार सबसे ज्यादा प्रासंगिक और प्रभावी है जिसमें सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास समाहित है तो वह विचार महात्मा गाँधी के विचार हैं । ऐसे विचारवान व्यक्ति और उनके विचार पर सम्पूर्ण विश्व में खूब लिखा पढ़ा गया । हिंदी के प्रसद्धि लेखक आचार्य कुबेरनाथ राय ने भी महात्मा गांधी पर लिखा है । उनकी की दृष्टि में महत्मा गाँधी 'चरित नायक' हैं ।

मूल शब्दः गांधीवाद, विश्व कल्याण, स्वदेशी विचार, निबंध साहित्य, रस दृष्टि

प्रस्तावना

भारत ऋषि–मुनियों और संत महात्माओं का देश है । इस देश में एक से बढ़ कर एक संत, महत्मा पैदा हुए हैं जिनका योगदान प्रातः स्मरणीय और अनुकरणीय है । आधुनिक भारत में भी अनेक ऋषि मुनियों और महात्माओं का जन्म हुआ, उन में से एक हैं मोहनदास करमचंद गाँधी जिन्हें दुनियाभर में महात्मा गाँधी के नाम से भी जाना जाता है । आज महात्मा गाँधी के विचार एक व्यक्ति के विचार न हो कर एक दर्शन का रूप ले चूका है जिसकी आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है । इस संसार में ऐसे चंद ही लोग हैं जिनके विचार को सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण माना जाता हो । वर्तमान में अखिल ब्रह्माण्ड की परिस्थितियों को देखते हुए अगर कोई विचार सबसे ज्यादा प्रासंगिक और प्रभावी है जिसमें सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास समाहित है तो वह विचार महात्मा गाँधी के विचार हैं । ऐसे विचारवान व्यक्ति और उनके विचार पर सम्पूर्ण विश्व में खूब लिखा पढ़ा गया । हिंदी के प्रसद्धि लेखक आचार्य कुबेरनाथ राय ने भी महात्मा गांधी पर लिखा है । उनकी की दृष्टि में महत्मा गाँधी 'चरित नायक' हैं । सन् 1964 में अपने पहले ही ललित निबंध 'हेमन्त की संध्या' में महात्मा गाँधी के संदर्भ में श्री कुबेरनाथ राय लिखते हैं कि " नायक से मेरा तात्पर्य किसी राजा–जमींदार से नहीं है । बल्कि अतित के चरित–नायकों या 'राष्ट्रीय दृनायकों' से है । एक समय था की महात्मा गाँधी ऐसे चरित–नायक की भूमिका निभा रहे थे ।"[1] यह श्री कुबेरनाथ राय का कथन है महात्मा गाँधी के संबंध में, यह कथन विशेष उल्लेखनीय है । क्योंकि नायक बनना सभी के बस की बात नहीं है और उसमें भी 'चरित नायक' विरले व्यक्ति हुआ करते हैं । एक और बात यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य है कि यह कथन श्री कुबेरनाथ राय जी अपने पहले ही निबंध 'हेमन्त की संध्या' में लिखते हैं जो उनके पहले निबंध संग्रह 'प्रिया नीलकण्ठी' में संग्रहीत है । जो व्यक्ति अपने पहले ही निबंध में महात्मा गाँधी के संबंध में ऐसा पुनीत विचार व्यक्त करता हो ऐसे लेखक, चिंतक, विचारक को पढ़ना हम सब का मौलिक कर्तव्य होना चाहिए। किन्तु ऐसा हुआ नहीं । ऐसा क्यों नहीं हुआ इस विषय में अन्यत्र लिखा जाएगा फिलहाल गाँधी जी के संबंध में विचार व्यक्तकरते हुए आगे बढ़ते हैं । जो एक सजग और सतर्क लेखक का कार्य होता है वही कार्य करते हुए हमें श्री राय जी दीखते हैं । श्री राय अपने लेखन के माध्यम से हमें वह दृष्टि प्रदान करते हैं जिससे किसी जीर्ण राष्ट्र का जीर्णोद्धार होता है, नवीनीकरण होता है, सौंदर्यीकरण होता है । आज यह बात किसी से क्षिपि नहीं है कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण में वहाँ के चरित नायकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । राष्ट्र का विकास निर्भर करता है, वहाँ के लोगों के आचरण और व्यवहार पर, उनके चरित पर उनके चरित नायक पर । श्री कुबेरनाथ राय गाँधी जी के संबंध में लिखते हैं कि– 'गाँधी ऐसे चरित–नायक की भूमिका निभा रहे थे' जिससे राष्ट्र का निर्माण हो रहा था और आज विश्व का भी नए सिरे से निर्माण हो रहा है । श्री कुबेरनाथ राय ने गाँधी जी के प्रभाव से प्रस्फुटित सुन्दर, सुभग वातावरण को समाज के समाने प्रस्तु करते हैं । अपने पहले निबंध संग्रह 'प्रिया नीलकण्ठी' के तीसरे निबंध 'सनातन नीम' में कुबेरनाथ राय महात्मा गाँधी जी के संबंध में लिखते हैं कि " गाँधी का प्रभाव भारत के देवताओं पर भी पड़ा । अब बीस–पच्चीस वर्षों से यहाँ के चंडी स्थान पर सूअर नहीं काटे जाते, मुर्गी और कबूतरों की बलि नहीं होती ।"[2] यह माहत्मा गाँधी का प्रभाव है, श्री कुबेरनाथ राय के गाँधी का प्रभाव । श्री राय महात्मा गाँधी जी के संबंध में यह विचार प्रस्तुत करते हैं कि गाँधी जी अपने आप को राष्ट्रनिर्माण के साथ–साथ विश्व निर्माण में भी अपने को लगाए हुए थे । कुबेरनाथ राय के गाँधी के संबंध में गांधीवादी विचारक, कुबेरनाथ राय के साहित्य के मर्मग्य विद्वान डॉ० मनोज कुमार राय 27 सितंबर 2020 को दैनिक जागरण समाचार पत्र में लिखे अपने लेख में लिखते हैं कि " मानव इतिहास के विराट रंगमंच पर गाँधी हमारे लिए रचमात्मक उर्जा के एक अक्षय स्रोत के रूप में प्रकट होते हैं । स्वच्छता और महिलाओं के उत्थान को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए रचनात्मक कार्यक्रमों के बहाने उन्होंने भारत के भविष्य की सुन्दर तस्वीर हमारे सामने उन्होंने पेश की ।"[3] आगे इसी लेख में आगे डॉ० मनोज कुमार राय लिखते हैं कि " आज मनुष्य जिस चौराहे पर खड़ा है उसके पास एकमात्र मार्ग है गाँधी मार्ग, जो सत्य और सेवा के जरिए सम्पूर्ण मवता के कल्याण का पक्षधर है ।"[4] श्री कुबेरनाथ राय के गाँधी के विचारों में सादगी, सहजता और स्वदेशीपन का मिश्रण है जो विरले ही व्यक्ति के पास होता है । आज इस समिश्रण का उपयोग कर विश्व समुदाय वर्तमान संकट से जूझ रहे मानवता को मुक्ति दिलाते हुए मनुष्य को एक नए मार्ग पर ला सकते हैं । स्वयं कुबेरनाथ राय

के शब्दों में " तीसरी दुनिया के अभावग्रस्त और पिछड़े देशों के लिए यदि कोई सही रुचिबोध, सौंदर्यबोध और जीवन–पद्धति संस्तुत की जा सकती है तो वह है गांधीवादी रुचिबोध, सौंदर्यपद्धति और जीवन–पद्धति क्योंकि ये 'स्वदेशीपन, सादगी और सहजता' के सूत्र पर आधारित हैं ।"[5] वर्तमान समय में उपस्थित संकट से मुक्ति गाँधीवादी विचार दिला सकता है जिसमें 'स्वदेशीपन का स्वाद, सादगी और सहजता' का भाव निहित है । श्री कुबेरनाथ राय महात्मा गाँधी जी के विचारों के प्रस्फुटन के संबंध में विचार रखते हैं कि महात्मा गाँधी के विचार किसी मजहबी उन्माद या किसी 'प्रोपेगेंडा' के तहत उत्पन विचार नहीं है जो एक समय बाद विकृत रूप धारण कर ले या या धीरे–धीरे अपने असल रूप में समाज के सामने उपस्थित हो जाए । आज विश्व का ऐसा कोई कोना नहीं होगा जहाँ महात्मा गाँधी के विचार का प्रचार– प्रसार न हुआ होगा। और ध्यान देने वाली बात यह भी है कि महात्मा गाँधी के विचारों का प्रचार–प्रसार तलवार के बदौलत या राजनीतिक तानाशाही शासन के माध्यम से नहीं हुआ है । महात्मा गांधी के विचार का प्रचार प्रसार विश्व कल्याणकारी भाव निहित होने के करण, सर्व हिताय विचार के करण हुआ है । श्री कुबेरनाथ राय के गाँधी शीलवान व्यक्ति थे । श्री राय लिखते हैं कि " गांधी जी 'शील' को 'सौंदर्य' से अलग करके नहीं देखते थे । शील और सौंदर्य का विभाजन और सौंदर्य की अलग स्वायत्तता की बात उन्हें स्वीकार नहीं थी । जो शील तत्व यानी चरित्र से तटस्थ, निरपेक्ष या विच्छिन्न है, वह सुन्दर होते हुए भी सुन्दर नहीं । गांधी मीरा के भजन पसंद करते थे, परन्तु 'गीतगोविंद' की महिमा उन्हें स्वीकर्य नहीं थी ।"[6] और स्वीकार हो भी तो कैसे ? जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हो तो ऐसे में 'गीतगोविंद' का राग अलापना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं था । जिस समय में जो राग उचित है उसके पक्षधर है श्री कुबेरनाथ राय के गाँधी । श्री कुबेरनाथ राय के गाँधी सहज जीवन के पक्षधर थे " सहज अर्थात् जो स्वभाविक, प्राकृतिक और अकृत्रिम हो ब्रह्मचर्य के पक्षधर, परन्तु उन्होंने सहज भोग, दाम्पत्य, प्रेम, पारस्परिक अनुराग का निषेध नहीं किया।"[7] कुबेरनाथ राय के गाँधी सरल व्यक्तित्व के धनी हैं स्वयं श्री कुबेरनाथ राय लिखते हैं कि " सरल माने सीधा, निष्कपट, प्रसन्न और प्रसादोपम । इसी से इस गुण को साहित्य में प्रसाद गुण कहा गया है । साहित्य में तीन गुण माने गए हैं, ओज, माधुर्य और प्रसाद । परन्तु गांधी जी प्रसाद को एक तीसरा गुण नहीं मानते और न ओज माधुर्य से उसे विच्छिन्न करके देखते हैं। बल्कि उनके अनुसार अलंकरणहीन, स्वाभाविक, प्राकृतिक, सहज सरलता में तीनों गुणों की अभिव्यक्ति की जा सकती है । अलंकरणहीन भाषा का अर्थ यह भी नहीं कि आजकल की हिप्पी पोशाक की तरह 'टापलेस–बाटमलेस' भाषा हो जैसी कि 'अकविता' या एण्टी पोएट्री के नाम से हिन्दी में चली थी । ऐसी फूहड़ सरलता गांधीवादी सरलता के अन्तर्गत नहीं आती । गांधीवादी सरलता बहुत कुछ वैसी बात है जैसी कि बहुत पहले श्री भवानी प्रसाद मिश्र ने एक बार लिखा था–जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लिख और उसके बाद भी हमसे बड़ा तू दिख !"[8] और यह सर्व विदित है कि माहत्मा गाँधी का व्यक्तिव सरल और सुलझा हुआ था । उन्होंने जिस सरलता से लिखा उस से आगे बढ़ सरल भाषा में संवाद स्थापित किया और उससे कहीं आगे बढ़ कर अपने जीवन में सरलता को धारण किया है । 'सादा जीवन उच्य विचार' ऋषि वाक्य को आधुनिक युग में अपने जीवन में साक्षात् अपनाने वाले ऋषि श्री कुबेरनाथ राय के महात्मा गाँधी ही हैं । मैं अभी तक अर्जित अपने ज्ञान के आधार पर यह लिख रहा हूँ कि साहित्य जगत में श्री कुबेरनाथ राय पहले ऐसे लेखक हैं जिन्होंने गाँधी जी के व्यक्तिव को केंद्र में रखते हुए पत्र–शैली में एक निबंध संग्रह लिखा है। 'पत्र मणिपुतुल के नाम' पत्र–शैली में लिखा गया एक ललित निबंध–संग्रह है । इस निबंध संग्रह में कुल चौदह निबंध हैं और सभी निबंध 'गांधीवादी रस–दृष्टि' और 'शील–बोध' से ओतप्रोत हैं। किंतु जैसा व्यवहार हिंदी साहित्य में कुबेरनाथ राय के साथ में किया गया !! उनके सम्पूर्ण लेखन को 'ललित निबंध' लेखक के खुटा में बांध कर छोड़ दिया गया ठीक वैसा ही तो नहीं किंतु बहुत सारे गाँधी जी के पक्षों को छोड़ दिया गया उनके चिंतन को नजरंदाज किया गया । स्वयं कुबेरनाथ राय के शब्दों में "गांधी चिन्तन के शील–शास्त्र की चर्चा तो प्रायः होती है। इसका प्रमुख चेहरा भी शील प्रधान है । परन्तु इसके सौन्दर्य–शास्त्र यानी रस दृष्टि की चर्चा अत्यल्प हुई है । यही नहीं, बल्कि आम धारणा तो यह है कि वे आजीवन शील–दृष्टि पर लगातार लिखते बोलते गए, पर सौन्दर्य–शास्त्र और रस–दृष्टि पर अलग से बहुत कुछ कहा नहीं है । परन्तु उनकी जीवन पद्धति में और समय–समय पर विविध घटनाओं के संदर्भ में उनके वक्तव्यों से उनकी रस दृष्टि के बारे में एक अवधारणा बहुत आसानी से बनती है । गांधी चिंतन के महायान–स्वरूप में रस–शास्त्र को ही प्रामाणिक स्थान मिलेगा और हम इसे 'सर्वोदय का रस–शास्त्र' कहना पसंद करेंगे ।"[9] 'सर्वोदय का रस–शास्त्र' को समझने के लिए ज़रूरी है महात्मा गाँधी को पढ़ना, समझना और साथ में उन लोगों को भी पढ़ना जिन्होंने चिंतन मनन कर माहत्मा गाँधी को पढ़ा और उन पर लिखा ।

श्री राय गाँधी के संबंध में जो लिखते हैं वह सब को स्मरण रखना चाहिए । श्री राय लिखते हैं कि "मेरी समझ में गांधी जी को समझने की कुंजी तीन शब्दों में है: सत्य, अहिंसा और अभय३ उनकी राजनीति को समझना चाहो तो केन्द्रीय शब्द 'अहिंसा' और शिल्प–दृष्टि, रसदृष्टि को समझना हो तो विशेष बल देना होगा 'सत्य' पर३ शिल्प की रचनात्मक प्रक्रिया और रूपायन में सत्य यानी 'अकृत्रिमता' 'स्वाभाविकता' आदि, सर्वाधिक महत्वपूर्ण है तो उस शिल्प की उपयोगिता के सन्दर्भ में 'अहिंसा' प्रमुख हो जाती है।"[10] प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक दृष्टिकोण होता है, अपना एक नजरिया होता है चीजों को देखने परखने समझने और समझाने का । परिस्थितियों के अनुसार हमें अपने दृष्टि में बदलाव लाना चाहिए । महात्मा गाँधी को पढ़ने के लिए उनको समझने और समझाने के लिए विशेष दृष्टि की आवश्यकता है और वह दृष्टि है पूर्वाग्रह मुक्त दृष्टि, सत्यवादी दृष्टि की आवश्यकता है क्योंकि महात्मा गाँधी सत्य के साधक थे । कुबेरनाथ राय गाँधी जी के हवाले से 'पत्र मणिपुतुल के नाम' निबंध संग्रह में 'पाँत का आखिरी आदमी' निबंध में लिखते हैं कि–" मैं सौन्दर्य को सत्य के माध्यम से देखता हूँ । सभी सत्य, न केवल विचार बल्कि 'सच्चे चेहरे', सच्ची तस्वीरें और सच्चे गीत भी दृ सुन्दर है । प्रायः लोग सच्चाई में सुंदरता देखी नहीं पाते, साधारण जन इससे दूर हो जाते हैं और इसमें निहित खुबसूरती को देख नहीं पाते ।"[11] कुबेरनाथ राय के गाँधी ने न केवल स्वयं सच्चाई में सुंदरता को देखा बल्कि उसे आम जन के बीच भी ले गए । महात्मा गाँधी ने बड़े सहजता से आम जन से ले कर विशिष्ट जन तक को उनके अपने दायित्वों, कर्तव्यों और अधिकार से उन्हें परिचय करवाते हैं। आज गाँधी जी का विचार दर्शन का रूप धारण कर चूका है, एक ऐसा दर्शन जो अपने में नए समाज के अनुसार जनकल्याण के विचार को समाहित किए हुए है । इस दर्शन में पाँत का आखिरी आदमी को भी उसका अपना अधिकार मिलने वाला है उसे अपने दायित्व और कर्तव्यों के बारे में भी जानकारी मिलता है । कुबेरनाथ राय अपने गाँधी के सम्पूर्ण कार्य–व्यापर को देखते हुए उन पर चिंतन मनन करते हुए अपने गाँधी के संबंध में लिखते हैं कि–"गांधीवादी चिंतन–पद्धति एक पूर्णांग जीवन का परिदृश्य एवं परिकल्पना को लेकर चलती है ।"[12] और यह निर्विवाद सत्य की किसी भी विचार को व्यवहार में आने में समय लगता है पर वह आता ज़रूर है । व्यक्ति हो या समाज प्रयासरत रहना चाहिए जैसा कि वीर सावकार थे, माहत्मा गाँधी थे ब्रिटिश तानाशाही के ख़िलाफ । अस्तु

संदर्भ सूची

1. कुबेरनाथ राय, प्रिया नीलकण्ठी, भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण दृ 1998 पृष्ठ संख्या दृ 13
2. कुबेरनाथ राय, प्रिया नीलकण्ठी, भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण दृ 1998 पृष्ठ संख्या दृ 24
3. डॉ० मनोज कुमार राय, दैनिक जागरण, नई दिल्ली, रविवार 27 सितंबर 2020
4. डॉ० मनोज कुमार राय, दैनिक जागरण, नई दिल्ली, रविवार 27 सितंबर 2020
5. कुबेरनाथ राय, मराल, भारतीय ज्ञानपीठ, 1993, पृष्ठ संख्या –11।
6. कुबेरनाथ राय, चिन्मय भारत रू आर्ष–चिंतन के बुनियादी सूत्र, हिन्दुस्तानी अकदेमी, 1996, पृष्ठ संख्या – 111
7. कुबेरनाथ राय, चिन्मय भारत रू आर्ष–चिंतन के बुनियादी सूत्र, हिन्दुस्तानी अकदेमी, 1996, पृष्ठ संख्या – 193
8. कुबेरनाथ राय, स्वच्छ और सरल, पत्र मणिपुतुल के नाम, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान,1980, पृष्ठ संख्या –74
9. कुबेरनाथ राय, चिन्मय भारत रू आर्ष–चिंतन के बुनियादी सूत्र, हिन्दुस्तानी अकदेमी, 1996, पृष्ठ संख्या –191
10. कुबेरनाथ राय, पत्र–मणिपुतुल के नाम, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान,1980, पृष्ठ संख्या – 64
11. कुबेरनाथ राय, पत्र–मणिपुतुल के नाम, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान,1980, पृष्ठ संख्या – 15
12. कुबेरनाथ राय, चिन्मय भारत रू हिन्दुस्तानी अकदेमी, 1996, पृष्ठ संख्या – 190